शहीद भूखन सिंह चेरो

(भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का गौरवशाली अध्याय)

गंगेश्वर प्रसाद सिंह
पूर्व आईपीएस और डीजीपी
वर्तमान सदस्य- कर्मचारी चयन आयोग
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

19 वीं सदी के आरंभ में पलामू (झारखंड) के राजनीतिक क्षितिज पर एक ऐसी हस्ती का उदय और अस्त होता है जिसने अंग्रेजी हुकूमत को हिलाकर रख दिया था। इतिहास के पन्नों पर यत्र-तत्र स्याही के कतिपय बिन्दु और चन्द्रबिन्दु बनकर ही उनकी शहादत आज भी कराहती रहती है। शहीदों की पुण्य भूमि पलामू में कहीं भी उनके बलिदान की स्मृति में एक शिलाखण्ड भी स्थापित नहीं दिखता। पलामू की धरती के कण-कण से हर क्षण उसकी विदेही और अतृप्त आत्मा मानो कहती हो- आई हो दू सौ बीस बरिस बीत गईल हमार शहादत के.....। शहीद भूखन सिंह चेरो पलामू के चांदो चेरो जागीरदार धूत सिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे। चेरो राजसत्ता की गरिमा को पुनर्स्थापित करना ही उनका परम लक्ष्य था। शौर्य, अदम्य साहस और बलिदानी जोशोखरोश से लबालब भूखन सिंह ने पलामू से ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया था। सीमित संसाधनों में 1500 चेरो-खरवार नवयुवकों की सेना लिए और सरगुजा के निवासी दलजीत सिंह की मदद से वह सब कुछ कर दिखाया जो नामुमकिन सा लगता है।

वैसे तो पूरे बिहार प्रांत में छठ की बिहानी का महत्व है पर पलामू में कुछ खास । इस सुबह शहीद भूखन सिंह ने शायद छठ का प्रसाद अगरवटा खाकर अपने भोक्ता (खरवार) सैन्य साथियों के साथ पलामू छोड़ सरगूजा के लिए कूच किया था सर पर कफन बांधे। भूखन सिंह को अंग्रेज विरोधी इस अभियान के सबसे बड़े दो लड़ाकू साथी बाचू भोक्ता एवं शिवबक्स भोक्ता पलामू के खरवारस थे।

भूखन जब सुरगूजा पहुंचे तब वहां के मराठा निवासी दलजीत सिंह ने उन्हें खुलकर मदद की। दलजीत सिंह घोर अंग्रेज विरोधी थे। इन्होंने पलामू सुरगूजा पथ पर पड़ने वाले तमाम घाटों को भूखन सिंह के लिए खोल रखा था। इतना ही नहीं सुरगूजा वासियों को भूखन सिंह के अंग्रेज विरोधी अभियान में शामिल होने की छूट दे रखी थी। फलतः शहीद भूखन सिंह की सैन्य शक्ति में काफी इजाफा हुआ। 1800 ई. के नवम्बर-दिसम्बर के दौरान भूखन सिंह ने काफी उत्पात मचाया। भूखन सिंह का सबसे सबसे बड़ा लक्ष्य था अंग्रेजी राज्य सत्ता को खत्म करना एवं चेरो राजसत्ता की पुर्नस्थापना। ब्रिटिश हुकूमत का सबसे ज्यादा बुरा प्रभाव चेरो-खरवार जागीरदार-जमींदार पर ही पड़ा था।

फरवरी 1801 में कर्नल जॉन्स के अधीन सेना की दो बटालियन भूखन सिंह से निपटने के लिये नियुक्त की गयी। कर्नल जॉन्स रामगढ़ बटालियन का कमांडेंट था। 10 फरवरी 1801 को जॉन्स को सूचना मिली की भूखन सिंह के लोगों ने राजा चूरामन राय के दीवान शिवप्रसाद सिंह के रंका स्थित किले पर हमला कर दिया। दीवान के पुत्र ने जवाबी कारवाई की असफल कोशिश की। भूखन सिंह के लोगों ने जमकर तबाही मचायी। फलतः दीवान

के 17 लोग मारे गये और उसके पुत्र को भी माथे में तीर लगी। इस हमले से पूर्व तक अंग्रेजों को यह संदेह था कि दीवान शिवप्रसाद सिंह भूखन सिंह को अपरोक्ष रुप से मदद कर रहा था। इस घटना के बाद अंग्रेजों के मन से यह संदेह जाता रहा। दीवान के लिए यह वरदान साबित हुआ। ब्रिटिश सरकार ने तभी भूखन सिंह को गिरफ्तार करने का आदेश जारी किया।

भूखन सिंह के बढ़ते सरकार विरोधी हिंसक क्रियाकलाप पर अंकुश लगाना कर्नल जान्स की प्राथमिकता थी। अतः उसने लेफ्टिनेंट कर्नल जान्स गिआर्ड को 11 फरवरी 1801 में लिखा- अगर भूखन सिंह और उसके लोगों को अपराध की सजा नहीं मिलती तो उनमें दुस्साहस और उदंडता बढ़ेगी फिर उसे दबाने के लिए ज्यादा और मजबूत सेना की जरुरत पड़ेगी। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए उसने अतिरिक्त फौज की मांग करते हुए तत्कालीन गया के कमांडेंट मेजर विलियम डॅफ को पत्र लिखकर तीन कम्पनी फौज पलामू में रखने का अनुरोध किया। इसके अतिरिक्त भी पलामू की बिगड़ती स्थिति से निपटने के लिए बटालियन हेडक्वार्टर में अतिरिक्त फौज रखने का अनुरोध किया। उल्लेख करना उचित होगा कि सुरगूजा भोंसला शासकों के अधीन था। भोंसला और अंग्रेजों के बीच हुई संधि के तहत दोनों ओर से शांति बनाये रखने की शर्त थी। इस स्थिति में अंग्रेज सुरगूजा के मराठा शासक बलभद्र के विरुद्ध सीधी कारवाई नहीं कर सकते थे। कर्नल जान्स ने कलकत्ता स्थित ईस्ट इंडिया कम्पनी को पत्र के माध्यम से अनुरोध किया कि दलजित सिंह को भूखन सिंह की मदद करने से रोका जाये।

कर्नल जान्स के पत्राचार के परिणामस्वरुप मार्च 1801 ई. में लेफ्टिनेंट रफसेड्स पलामू में विशाल सेना लेकर प्रवेश किया और भूखन सिंह को पलामू छोड़ने के लिए बाध्य किया। जवाबी कारवाई के लिए भूखन सिंह कमर कस कर तैयार था। उसने दलपति सिंह पर दवाब देना शुरू किया और रंका किले पर पुनः आक्रमण के लिये मदद मांगी।

लेफ्टिनेंट रफसेड्स के बढ़ते दवाब के कारण भूखन सिंह के दो सहयोगी लड़ाकू बाचू भोक्ता और शिवबक्स भोक्ता ने अंग्रेजों के समक्ष बिना शर्त समपर्ण कर दिया। लेकिन भूखन हार मानने वाले नहीं थे। वे तत्काल 150 पैदल एवं कुछ घुड़सवारों के साथ सुरगुजा की सीमा मेहर नामक स्थान पर पहुंचे और वहां से प्रमुख जागीरदारों के नाम खुला संदेश भेजा। उनसे गुहार लगायी कि वे अपने सैन्य बल के साथ उनके (भूखन सिंह) साथ हो लें और अंग्रेजों के विरुद्ध उसकी मदद करें। अंग्रेजों को यह उम्मीद न थी कि भूखन सिंह इतनी जल्दी उनके विरुद्ध उठ खड़ा हो जायेंगे। रफसेड्स ने कर्नल जान्स को सुरगूजा सीमा स्थित कुनोल नाला पर छावनी डाल कर पशु चोरी बंद करने का आदेश दिया। और सुरगूजा शासक से पशु चोरी बंद करने संबंधी अनुरोध का अनुमोदन चाहा। अपने पक्ष की सफाई में रफसेड्स ने जान्स को पत्र लिखा- आसपास में सेना के जमाव से भूखन सिंह के लूट मार पर अंकुश लगाने में सहूलियत होगी और उसके इरादे के बारे में सही मूल्यांकन किया जा सकता है। पलामू में पूरी तरह से शांति बहाल तब तक संभव नहीं जब तक सुरगूजा की ओर से पलामू वासियों पर आक्रमण की आशंका बनी रहती है। पर आज यही वस्तुस्थिति है। रफसेड्स ने भूखन सिंह द्वारा दोबारा पलामू पर आक्रमण की आशंका की थी जो निर्मूल न थी। अप्रैल 1801 ई. के आरंभिक चरणों में भूखन सिंह के लोगों ने सुरगूजा की सहायता से पलामू में पुनः लूट-मार करनी शुरू की। चार अप्रैल 1801 को रायगढ़ के मजिस्ट्रेट टी. स्मिथ ने जी. डीवडेसवेल (सरकार के सचिव) को सुझाव दिया कि नागपुर के भोंसले राजा रघु जी

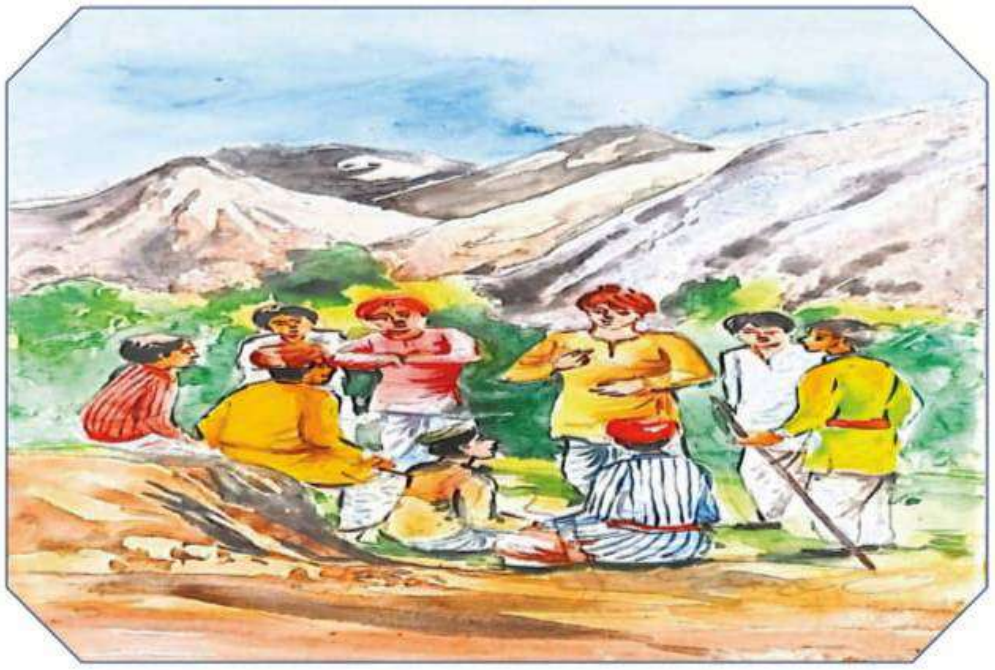

भोंसले से सुरगूजा के राजा बलभद्र की शिकायत करने का समय आ गया है या इसकी जरुरत है। स्वयं राजा और उसके लोग भूखन सिंह की मदद कर रहे है। रफसेड्स के अनुरोध पर जान्स और स्मिथ ने नागपुर के भोंसले शासक को बलभद्र को रोकने का अनुरोध किया ताकि पलामू में इस तरह के आक्रमण की घटना पर अंकुश लगे। इसी संदर्भ में बी. एडमनस्टोन (विदेश प्रभाग में सरकारी सचिव) ने एच.टी. कोलब्रुक (रेजिडेंट) नागपुर को 11 अप्रैल 1801 में निम्न शब्दों में पत्र लिखा - आप राजा बरार को सूचित करें कि पलामू में संभावित विप्लव रोकने कि दिशा में कदम उठाये। आप सुरगूजा के राजा को इस बात की सलाह दें कि कम्पनी के मजिस्ट्रेट ने कम्पनी राज्य और मराठा राज्य की सीमा के स्थायी निर्धारण के संबंध में जो उपाय सुझाये है उस पर तत्क्षण अमल करें ताकि सुरगूजा से आक्रमणकारी पलामू में न घुसे। विशेषतः वैसे विप्लवकारियों के खिलाफ जो मराठा क्षेत्र में जमे हैं।

इस बीच कर्नल जान्स एवं मेजर डेविसन पलामू के रास्ते सुरगूजा आ धमके। 1802 ई. की ग्रीष्म ऋतु थी। उनके साथ दो कम्पनी सिपाही और दो तोपें थीं। कर्नल जान्स को आदेश दिया गया कि वह सुरगूजा में तत्काल भिड़ंत की नीति न अपनाये। यह भी कि वह सुरगूजा में प्रवेश न करे। शांतिपूर्ण समझौते की नीति असफल होने पर ही वह वहां घुसे। परन्तु सुरगूजा के शासक बलभद्र के लोगों ने कर्नल जान्स की उम्मीदों पर पानी फेर दिया। फलतः वह सुरगुजा में घुसने को बाध्य था। स्थिति की गंभीरता को भांप कर भूखन सिंह अपने सहयोगियों के साथ मराठा क्षेत्र सम्बलपुर की ओर चले गए। जान्स सैनिकों के साथ 1802 के ग्रीष्म ऋतु तक ठहरकर बलभद्र से यह आश्वासन लेने में जुटा रहा कि सुरगुजा संलग्न कम्पनी क्षेत्र की सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम वह करे। जून 1802 में जान्स वहां से रामगढ़ के लिए रवाना हुआ।

छोटानागपुर के नागवंशी शासकों के राज्य में पड़ने वाले बरवा नामक स्थान में जान्स बीमार पड़ा और 29 जून 1802 को शेरघाटी पहुंचकर मर गया। लेफ्टिनेंट ग्लेड (18 वीं नेटिव इन्फैन्ट्री) भी 29 मई 1802 को मर गया। सुरगूजा अभियान में शामिल अधिकांश सिपाही वापस आकर बीमार पड़ गये।

सुरगूजा अभियान कम्पनी और पलामू के चेरो राजा चुरामन राय के लिए काफी महंगा पड़ा। चूरामन राय पर कम्पनी ने तरह-तरह के हुक्म जारी किये जिसे पूरा

करने में उसकी आर्थिक हालत बिगड़ गयी। उसे घाटों और पुलिस थाने की रखवाली पर लगने वाले सिपाहियों का खर्च वहन करना पड़ा। अन्ततः सीमित संसाधनों और देशी जमींदारों-जागीरदारों की उदासीनता मिश्रित

दगाबाजी के कारण भूखन सिंह की अंग्रेज विरोधी मुहिम ढीली पड़ गयी और अंग्रेजों के हाथों 1803 ई. में गिरफ्तार कर लिए गए। बिना सुनवाई उन्हें सरेआम लेस्सलीगंज बाजार में फांसी पर लटका दिया गया। लेकिन भूखन सिंह की शहादत और अंग्रेज विरोधी मुहिम के दूरगामी परिणाम हुए। उनकी शहादत के साथ ही पलामू में क्रांति की एक नयी लहर दौड़ गयी। विशेषतः चेरो खरवार जनजाति के नवयुवकों ने भूखन सिंह की शहादत को जीवित रखा। अंग्रेजी हुकूमत के पलामू पर काबिज होने के पूर्व चेरो खरवार जागीरदार एवं जमींदार की हुकूमत यहां चलती थी। ठाकुर राजपूतों ने भी यदाकदा इन आंदोलनकारियों की मदद की थी, अपरोक्ष रूप से। 1857 की क्रांति के पूर्व भी 1832 ई. में पलामू में चेरो खरवार के सम्मिलित प्रयास से अंग्रेज विरोधी क्रांति की आग भभक उठी थी। यह इतिहास के पन्नों पर अंकित है । नीलाम्बर और पिताम्बर की शहादत भूखन सिंह चेरो की शहादत की बस अगली कड़ी थी। 1817 ई. में पुनः एकबार पलामू में छोटे-छोटे चेरो जमींदारों ने अंग्रेजी सत्ता विरोधी मुहिम चलायी। पर इसका नेतृत्व बड़े चेरो जागीरदार कर रहे थे। चैनपुर के ठाकुर रामबक्श सिंह भी इस मुहिम को हवा दे रहे थे। इस आशय का एक पत्र मेजर रफसेड्स के हाथों लगा था। शहीद भूखन सिंह की तरह इस बार भी अंग्रेज विरोधी क्रांतिकारियों की शरणस्थली सुगूजा ही था। प्रमुख चेरो जागीरदार एवं जमींदार जो 1817 के इस मुहिम में अग्रणी भूमिका निभा रहे थे वे हैं-विश्रामपुर चेरो रियासत के गजपति राय, ओबरा के जीत सिंह और कुरहा के शिव राय सिंह, पहलवान सिंह एवं पवन सिंह। अंग्रेजों ने बड़ी बेरहमी और बेशरमी के साथ जीत सिंह (ओबरा) और शिवराज सिंह (कुरहा) को डकैतों का सरदार घोषित कर आजीवन कैद की सजा सुना दी। ये दोनों क्रांतिकारी देशभक्त कलकत्ता स्थित अलीपुर जेल में डाल दिये गये। संभवतः जेल में ही उनकी मौत हो गई थी।